Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijssah/

International Journal of Social Sciences Arts and Humanities
(ISSN: 2321-4147) (Scientific Journal Impact Factor: 6.002)
A Peer Reviewed UGC Approved Quarterly Journal

शोध पत्र

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन की प्रासंगिता मूल्यांकन एवं देन

हुक्कम सिंह*

राजनीति विज्ञान विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खटीमा (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड– 262308।

शोध पत्र का विवरण

अनुरूपी लेखक
हुक्कम सिंह

मुख्य शब्द
भारतीय संस्कृति, एकात्म मानववाद, स्वदेशी सामाजिक–आर्थिक मॉडल, वैकल्पिक राजनीति, शासन विवेचना।

संक्षिप्तिका

दीनदयाल उपाध्याय (25 सितम्बर 1916–11 फरवरी 1968), जिन्हें पंडितजी के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय राजनीतिज्ञ, एकात्म मानववाद विचारधारा के समर्थक और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पूर्ववर्ती राजनीतिक दल भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के नेता थे। एकात्म मानववाद मानव जीवन व सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। इसका पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने किया था। पं0 दीनदयाल उपाध्याय एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को ***'एकात्म मानववाद'*** कहा जाता है जिसका उद्देश्य एक ऐसा ***'स्वदेशी सामाजिक–आर्थिक मॉडल'*** प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केंद्र में मानव हो। पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने पश्चिमी ***'पूंजीवादी व्यक्तिवाद'*** एवं ***'मार्क्सवादी समाजवाद'*** दोनों का विरोध किया, लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। ये पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हों लेकिन उनके अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण न हो।

1.0 परिचय

प० दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति एवं इसके मूल्यों की रक्षा हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के साथ उन्होंने देश को एक प्रगतिशील विचारधारा देने का काम किया और ***"वैकल्पिक राजनीति"*** की नींव रखी। उन्होंने जो अंत्योदय का मार्ग दिखाया उसी का नतीजा है कि 21वीं सदी का भारत देश के गरीब, वंचित व शोषित वर्ग को विकास की मुख्यधारा में लाने में सफल हो पा रहा है। उनका कहना था कि हम किसी विशेष समुदाय या वर्ग का नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र की सेवा करने का वादा कर रहे हैं। पं० दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय विचारक, अर्थशाष्त्री, समाजशाष्त्री, इतिहासकार और पत्रकार थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माण में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई और भारतीय जनसंघ (वर्तमान, भारतीय जनता पार्टी) के अध्यक्ष भी बने। इन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान भारत द्वारा पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता और पश्चिमी लोकतंत्र का आँख बंद कर समर्थन का विरोध किया। यद्यपि उन्होंने लोकतंत्र की अवधारणा को सरलता से स्वीकार कर लिया, लेकिन पश्चिमी कुलीनतंत्र, शोषण और पूंजीवादी मानने से साफ इनकार कर दिया था। इन्होंने अपना जीवन लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाने और जनता की बातों को आगे रखने में लगा दिया।

Corresponding Author can be contacted at hsingh.polity@gmail.com
Received:30-11-2025; Sent for Review on: 05-12-2025; Draft sent to Author for corrections: 12-12-2025; Accepted on: 22-12-2025; Online Available from 26-12-2025
DOI: 10.5281/zenodo.18058532
IJSSAH-8888/© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.

अय निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम।।

अर्थात् यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित चित्त वाले व्यक्तियों की होती है, इसके विपरीत उदार चरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती एक परिवार जैसी होती है। इसी श्लोक के आधार पर पं. दीनदयाल जी कहते हैं कि एकात्म मानववाद समाज में वसुधैव कुटुम्बकम के आधार पर समाज में व्यक्ति एवं को समाज समझने की आवश्यकता है। इसी आधार पर एक नये समाज राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय उत्पादन के केन्द्रीयकरण के खिलाप रहते थे। वे पश्चिमी लोकतंत्र के समर्थक थे परन्तु पूंजिवाद के खिलाप थे। वे वेतहाशा मशीनीकरण व औघोगीकरण के खिलाप थे। मशीनीकरण व्यक्ति को शिल्प व सृजन से दूर करता है और कुटीर उघोग को कमजोर करता है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति बनाम व्यवस्था को गलत मानते थे। कोई व्यवस्था व्यक्ति निरपेक्ष नही होती, तथा कोई व्यक्ति व्यवस्था निरपेक्ष नही होता है। वे इस प्रकार के समाजवाद के समर्थक है जो ***'मनुष्य'*** की चिंता करता है। समाजवाद में केन्द्रीकरणवादी, पूंजीवादी के सब दोष विधमान रहते है। इसमें राज्यवादी नौकरशाही का अतरिक्त दोष जुड़ जाता है।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के मुख्य विचारों को उनकी भारतीयता, धर्म, धर्मराज्य और अंत्योदय की अवधारणा में देखा जा सकता है। अंत्योदय, हालांकि गांधीवादी शब्दकोश से संबंधित एक शब्द है, यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में अंतर्निहित है। उनकी ***'सबके लिए शिक्षा'*** और ***'हर हाथ को काम, हर खेत को पानी'*** की दृष्टि उनके आर्थिक लोकतंत्र के विचार में परिणत होती देखी गई। आर्थिक लोकतंत्र के अपने विचार की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं, ''यदि सभी के लिए एक वोट राजनीतिक लोकतंत्र की कसौटी है, तो सभी के लिए काम आर्थिक लोकतंत्र का एक पैमाना है। उन्होंने बड़े पैमाने के उद्योग आधारित विकास, केंद्रीकरण और एकाधिकार के विचारों का विरोध करते हुए स्वदेशी और विकेंद्रीकरण की वकालत की। उन्होंने आगे कहा कि रोजगार के अवसरों को कम करने वाली कोई भी व्यवस्था अलोकतांत्रिक है। उन्होंने सामाजिक असमानता से मुक्त एक ऐसी प्रणाली की वकालत की जहां पूंजी और सत्ता का विकेंद्रीकरण हो। पं0 दीनदयाल उपाध्याय मानते है कि देश की आय शिल्पी व कारीगरी पर आधारित हो वे शिल्पी व कारीगर की उपेक्षा करने वाले औद्योगीकरण का निषेध करते है तथा आर्थिक लोकतन्त्र के लिये निम्न समीकरण देते है।

ज X क X य = इ

यहॉ **'ज'** जन का परिचायक है।
'क' क्रम की अवस्था या व्यवस्था का परिचायक है।
'य' यंत्र का परिचायक है।
'इ' समाज की प्रभावी इच्छा या संकल्प का घोतक है।

श्रम कर्म का लक्ष्ण है। श्रम करना मनुष्य का मूलभूत कर्तव्य है। राज्य का कर्तव्य है व्यक्ति को उसकी योग्यता, क्षमता के अनुसार काम करने का अवसर दे जिससे जाति, लिंग, रंग का भेद–भाव न हो पं0 दीनदयाल उपाध्याय का मानना है कर्म की प्रेरणा का आधार लोभ–वृत्ति नही करना कर्तव्य सुख है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय धर्म शास्त्र, अर्थशास्त्र व समाजसास्त्र में पारस्परिक संतुलन की हिमायती है जिस संतुलन को वे सांस्कृतिक कार्य मानते है।

2.0 पं0 दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन

पं0 दीनदयाल उपाध्याय का मानना है कि अर्थ के अभाव में हमारा समाजिक ढाँचा ही नष्ठ हो सकता है। यदि समाज में सुख, शांति, ऐश्वर्य लाना है तो आर्थिक क्षेत्र को मजबूत बनाना होगा। बिना अर्थ के धर्म की जीव खोंखली है। यही कारण है कि प0दीनदयाल उपाध्याय ने अर्थ के अभाव व प्रभाव दोनो को समाज के लिये उपयुक्त नही माना बल्की दोनो को मिटाकर अर्थायाम की स्थापना की बात की है। क्योंकि धन का अभाव मनुष्य को चोर बनाता है तथा अभाव मूलक नियोजन समाज में अधर्म को धर्म बना देता है वैसे ही अर्थ का अभाव धर्म का नाश करता है।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ जिस पार्टी की स्थापना की वह अब वर्तमान में पूर्ण बहुमत के साथ केन्द्र और अधिकांश राज्यों में सत्ता पर काबिज है, तथा ***"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास"*** के मूल मंत्र के साथ लगातार कार्य करते हुये अंत्योदय को साकार कर रही है। यह विचार पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने आधी सदी पहले प्रतिपादित किया था अतः वर्तमान राजनीतिक परिपेक्ष्य मे उपाध्याय जी के विचारों की प्रसंगीता बनी हुयी है। आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्वभर में विकास के कई मॉडल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास मॉडल की तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म मानववाद ऐसा ही एक दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय (Integral and Sustainable) है। समष्टि का हित ही सर्वोपरि है। समष्टि का हित ही व्यक्तिगत आचरण के धर्म, अधर्म का निर्णय करता है। व्यक्ति को सामूहिक धर्म का पक्षधर होना चाहिए भले ही उसका व्यक्तिगत लोकापवाद हो। धर्म समाज में वैमनस्य को दूर करता है। परन्तु यह भी सत्य है कि धर्म के नाम पर जितने भी समाज मे दंगे फसाद, मार–काट होती है उतना तो दुर्भिक्ष आने पर भी लोग नही मरते है। समाज में सामाजिक विविधताओं का समायोजन व समन्वय करना धर्म का कार्य है, कर्मकाण्ड को संस्कृति नही मानना चाहिए।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी कहते है कि हमारी ऋषि महर्षियों ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पुरूषार्थ चतुष्टय से समुचित समग्र जीवन का दर्शन प्रस्तुत किया है जिससे सभी दृष्टि न केवल मनुष्य की संतुष्टि का प्रवधान है अपितु संपूर्ण मानवीय संबंधों का आधार भी है। इन चार प्रकार के पुरूषार्थो से युक्त मानव ही एकात्म मानव दर्शन की विचारधारा का मूल बिन्दु भी है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने हिन्दू–मुसलिम एकता के विषय में इसे मजहब से संभव मानते है। मस्जिद की राजनीति एकता में वाध क है। सांस्कृतिक रूप में एक होने पर मद विभिन्नता नही रहेगी। यदि राष्ट्रीय जीवन हिन्दू राष्ट्र हो तो एकता आ सकती है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी सामाजिक समस्याओं के प्रति भी बहुत सचेत रहते थे उनके अनुसार सामाजिक समस्याओं का समाधान करना रेशम के धागो की गुत्ती को सुलझाने के जैसा है। सदियों से सुसित, पिड़ित, वंछित, दलित और उसके फलस्वरूप पिछड़ी अवस्था में रहने वाले समाज को शेष समाज की बराबरी की सुविधा एवं संरक्षण देना उचित ही है और ऐसा करते सयम यदि उच्च वर्ग इसकी शिकायत करे तो वह सामाजिक एकात्मता के अभाव का लक्ष्ण माना जायेगा। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी राजनीतिक दर्शन में वे ***'राज्य'*** संस्था को समाज की महत्वपूर्ण व व्यवहारिक अवश्यक्ता मानते है। उनका मानना है कि राज्य समाज की आवश्यक्ता के लिये बनाये गयी एक संस्था है। राज्य के सम्बन्ध मे उनका मानना है। ***"कि शासन वह अच्छा होता है जो कम से कम शासन करें।"*** भारतीय जनतंत्र की कलपना में सभी मतों से सांमजस्य व समन्वय को प्रमुखता देते है। विरोधी मत का एक भी व्यक्ति क्यों न हो उसका हमे आदार करना चाहिए तथा सत्ता में विरोधी दल के नेता को वे वेतन दिलाने के पक्षधर है। उनका मानना है कि लोकतन्त्र की सफलता के तीन मनोभाव है

1. सहिष्णुता एवं संयम
2. अनासक्त भाव
3. कानून के प्रति आदर की भावना

उनकी राजनीतिक चिंतनधारा हिमालय सदृश्य उच्च जीवन मूल्यों के साथ प्रवाहमान रही। वे राजनीति की कीचड़ में भी कमल के पुष्प जैसे सदैव अलग हटकर उनका व्यक्तित्व था। वर्तमान में जो राष्ट्र के ऊपर प्रहार की प्रक्रिया चारों तरफ दिखलायी पड़ रही है, उसको उन्होंने स्वतंत्रता के पूर्व ही भाँप लिया था और जनसंघ की स्थापना के साथ ही अपने मुख्य एजेण्डे में रखा। वे द्विराष्ट्रवाद की जगह एकात्म राष्ट्र के पक्षधर थे। यही कारण था कि मुस्लिम समस्या पर उनके विचार थोड़े कठोर अनुभव होते हैं। किन्तु उन्होंने समस्या से आँख मूँदने के बजाय सत्य देखना पसन्द किया। दीनदयाल जी के राष्ट्रीय चेतना का आधार एकात्मता थी। जो कि वेदान्त के अद्वैतवाद का प्रतीक है। उनके एकात्म समाज की अवधारणा राष्ट्रीयता की भावना से मुखरित थी। यह मात्र काल्पनिक न थी, बल्कि पुर्णतः व्यावहारिक थी। उनकी राष्ट्रभक्ति उनके अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण में बाधक नहीं थी। दीनदयाल जी की राष्ट्रीय चेतना का आधार व्यक्ति, परिवार,

समाज से लेकर ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण जीवों में सभी के सुखी एवं नीरोगता के भावों से पूर्ण थी। वे मानव चेतना को राष्ट्रीय चेतना के रूप में व्यक्त करते हुए उसे निम्न स्तर से उच्चतर बनाने के पक्षधर थे। जिसमें उन्हें पूर्णतः तो नहीं लेकिन अंशतः अवश्य सफलता मिली।

3.0 एकात्म मानववाद के परिपेक्ष्य में

पं0 दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा प्रतिपादित वाद ***'एकात्म मानववाद'*** का दर्शन कोई नया दर्शन नही होते हुए भी संपूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास करता है। यह दर्शन भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का अदभुत संगम है। इसके एक और जहॉ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे पुरूषार्थ है वही व्यक्ति, समाज, परिवार, राष्ट्र जैसे विषय भी उतने ही प्रमुखता के साथ सम्मिलित किये गये है। एकात्म मानववाद प्राचीन भारतीय संस्कृति की नवीन वैश्विक विचार प्रवाह के संदर्भ में एक युगानुकूल व्याख्या है। यह न केवल भारतीस संस्कृति का युगानुकूल विवेचना है वरन् वैश्विक विचारों के लिये पूरक भारतीय चिन्तन है। एकात्म मानववाद का विचार प्रचलित वादो में न्यूनताओं को दूर कर उन्हे परिपूर्ण बनाने के लिये किया गया है।

एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपभोग का समर्थन करता है जिससे कि उन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके। यह मानव कल्याण के समग्र विचार का समर्थन करता है। एकात्म मानववाद का दर्शन अनियंत्रित उपभोक्तावाद तथा तीव्र औद्योगीकरण का विरोध करता है क्योंकि इसका लाभ सर्वाधिक निर्धन व्यक्ति तक नहीं पहुँचता। यह सिद्धांत वर्तमान समय के सभी के लिए समावेशी विकास के संदर्भ में अत्यधिक प्रांसगिक है। एकात्म मानववाद का दर्शन लोकतंत्र, सामाजिक समानता तथा मानवाधिकारों के विचारों का भी समर्थन करता है, चूंकि सभी धर्मों और जातियों का सम्मान तथा उनकी समानता धर्मराज्य की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है।

एकात्म मानववाद का लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को गौरवपूर्ण जीवन प्रदान करना है। इस प्रकार यह उन सिद्धांतों और नीतियों को प्रोत्साहित करता है जो श्रम, प्राकृतिक संसाधन तथा पूँजी के उपयोग को संतुलित करने में सक्षम हों। इस दर्शन के अंगीकरण से राजनीति के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया जा सकता है एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है अतः भारत जैससे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं ***'अंत्योदय'*** अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। इस प्रकार, यह दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में सदैव प्रासंगिक रहेगा। पं0 दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विचारों में राष्ट्रीयता की भावना समायी हुयी है, उनका प्रत्येक चिन्तन राष्ट्रीयता को ध्यान में रखते हुये किया गया है। राष्ट्रीयता वर्तमान परिदृश्य में भारत को मजबूत एवं सशक्तिकरण के लिये महत्वपूर्ण है, इसलिए हम कह सकते है राष्ट्र अवश्यक तत्व है।

एकात्म मानव दर्शन एक ऐसी अवधारणा है जिसको सर्पिल आकार की मण्डलाकृतियों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है जिसके केन्द्र में व्यक्ति होता है। व्यक्ति को घेरे हुये अगली सर्पिल आकृति परिवार, परिवार को घेरे हुये अगली सर्पिल आकृति समाज, इस प्रकार इसके बाद राष्ट्र फिर विश्व या समष्टि और अंत में परमेष्टि या अनन्त ब्राहमाण्ड को अपने में समाहित किये हुये है।

4.0 विकास के परिपेक्ष्य में

विकास का यही क्रमिक आधार है जिसमें एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे....., सभी एक दूसरे से परस्पर जुड़ कर क्रमिक रूप से विकसित होते है और अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखते हुये एक दूसरे के पूरक व स्वभाविक सहयोगी के रूप में स्थापित होते है, इनमें परस्पर कई संघर्ष नहीं है।

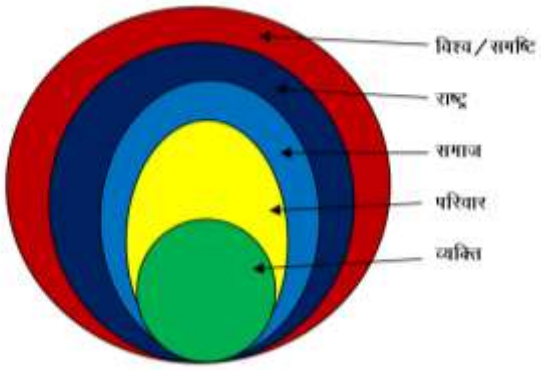

व्यष्टि (व्यक्ति) से समष्टि (विश्व) तक

गांधी जी के समान उन्होंने साधन और साध्य की पवित्रता पर जोर दिया। दीनदयाल जी के ऊपर महर्षि श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। उन्होंने स्वतंत्र भारत में कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष के विपरीत समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। एकात्म मानववाद उनकी इसी दृष्टि का परिणाम है। उन्होंने मर्यादाविहीन राजनीति का विरोध किया तथा अनुशासित और नैतिक राजनीति की वकालत की। गांधी के दर्शन का भी मूलमंत्र यही था। पं0 दीनदयाल जी के पीछे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शक्ति खड़ी थी। वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चिन्तन से उद्भूत एक ऐसे योद्धा थे जिन्होंने भारतीय राजनीति में भारत की मूल संस्कृति को जोड़ने का उपक्रम नहीं किया बल्कि उसके लिए एक ऐसे मंच की प्रतिष्ठा थी जिनको 1976 तक भारतीय राजनीति को गम्भीरता से प्रभावित किया। यह राजनीतिक मंच था– भारतीय जनसंघ। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय जनसंघ की स्थापना डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने किया है तो पं0 दीनदयाल जी उसके प्राण प्रतिष्ठापक थे। पं0 दीनदयाल जी का राजनीतिक चिन्तन राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के दर्शन से अनुप्राणित रहा। वे जनसंघ के महामंत्री तथा अध्यक्ष भी थे।

5.0 वर्तमान परिपेक्ष्य में दर्शन

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद की प्रासंगिता और बड़ जाती है जब सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी की संकट से गुजर रहा है, विश्व में अनेक देशों के मध्य संकट (जैसे– रूस–यूक्रेन युद्ध), पलायन, शरणार्थियों का संकट, मानवाधिकर जैसी समस्याओं में निजात दिलाने के लिये एकात्म मानववाद जैसी विचार धारा की प्रासंगिता और अधिक हो जाती है। राजनीति को सेवा का प्रमुख साधन माना जाता रहा है। परन्तु आजकल राजनीति स्वार्थपूर्ति का अड्डा बनता जा रहा है। ऐसे समाज में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जैसे चिंतक का प्रादुर्भाव होता है, जिसने कहा कि राजनीति राष्ट्र के लिए होनी चाहिए। जिस राजनीति में राष्ट्रोत्थान प्रमुख न हो, ऐसी रजनीति देश, समाज एवं राष्ट्र सबके लिए घातक है। मुख्य रूप से देखा जाय तो वे एक सामाजिक कार्यकर्त्ता (संघ के प्रचारक) थे। राजनीति तो उन पर थोप दी गयी थी। संगठनों को उन्होंने साध्य माना, साधन नहीं, लेकिन साधनों की पवित्रता के बारे में वे बहुत सावधान रहते थे। उन्होंने अपने साध्य को प्राप्त कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा जनसंघ को साधन के कारण चुन लिया तो फिर संघ और जनसंघ के संगठन को साध्य के अनुकूल साधन बनाने के निमित्त ही उन्होंने आजीवन साधना की। वे अखण्ड भारत के हिमायती थे। आजाद हिन्दुस्तान के अखण्ड भारत की आवाज बुलन्द करने वाला एकमात्र स्वर भारतीय जनसंघ का था तथा दीनदयाल उपाध्याय उसके व्याख्याता थे। यही कारण था कि अखण्ड भारत की अवधारणा से सम्बन्धित ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विश्लेषणार्थ उन्होंने अखण्ड भारत क्यों? नामक पुस्तिका भी लिखी । उनका अखण्ड भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नही अपितु जीवन के भारतीय दृष्टि का द्योतक है, जो अनेकता में एकता का मार्ग दिखलाता है। उनके लिए अखण्ड भारत कोई राजनीतिक नारा नही था, बल्कि उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन का मूलाधार था। हम देखते हैं कि स्वतंत्रता हमें अखण्ड भारत के रूप में नहीं बल्कि पाकिस्तान और बाद में बांग्लादेश जैसे अन्य देश के बटवारे के रूप में खण्डित स्वरूप में मिली। कश्मीर समस्या भी भारत के विभाजन के साथ ही गले की हड्डी बनी हुई थी। जिसको जनसंघ के नवीन रूप भाजपा सरकार ने 2019 अगस्त में धारा 370 को समाप्त कर हमेशा–हमेशा के लिए खत्म कर दिया।

उनकी एकात्मक शासन विवेचना पाश्चात्य शासन व्यवस्था के अनुसार विवेचित नहीं, वरन् वह एक स्वतंत्र विचार है, जिसका आधार राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक मा०स० गोलवलकर की अखण्ड मंडलाकर शासन रचना की धारणा है। भारत प्रदेश जनपद विकास खण्ड ग्राम पंचायत अखंड मंडलाकार पंचवलयी एकात्मक राज्य ऐसे ही गांधी जी भी अखण्ड मंडलकार समाज रचना के समान ही सामुद्रिक वर्तुलाकार समाज रचना के पक्षपाती थे। उपराष्ट्रीयताओं के विघटनकारी खतरे तथा जनतंत्र की मूल इकाई ग्राम पंचायत की उपेक्षा का समाधान उन्होंने अपने एकात्म शासन को व्याख्यायित करने का प्रयास किया। उनके द्वारा स्थापित भावात्मक अधिष्ठान यदि संरचनात्मक तर्क शुद्धता को प्राप्त कर सके तो उनका यह चिंतन भारतीय राजनीति शस्त्र के लिए मौलिक व महत्वपूर्ण देन हो सकती है।

राजनीति आज की तरह स्वार्थों पर नही थी। वे अपने राजनीतिक जीवन में सत्यता शुचिता, निश्छल निष्ठा और साधनों की पवित्रता के पक्षधर थे। राजनीतिकों द्वारा किये जाने वाले दल परिवर्तन का वे घोर विरोध किया करते थे। दल पवित्रन आज प्रमुख रूप से राजनीतिकों द्वारा स्वार्थ साधने का माध्यम बन गया है। जिस भी पार्टी की ओर से उन्हें लाभ दिखलायी पड़ता है, वे उसी पार्टी में शामिल हो जाते हैं। कई राजनेताओं को देखा गया है कि अपने जीवन में कई पार्टियों में शामिल होकर विधायक सांसद, मंत्री बन जाते हैं। ऐसे राजनेताओं का कोई सिद्धान्त नहीं होता। आज जिस पार्टी को गाली देते हैं, आलोचना करते हैं, जब वे उसी पार्टी में शामिल हो जाते है, तो जिस पार्टी से आये, उसकी आलोचना करने लगते है। दल परिवर्तन के साथ ही दूसरी मुख्य समस्या जो राजनीति में प्रमुख है, वह बढ़ता अपराधीकरण है। राष्ट्रीय हो या क्षेत्रीय कोई भी पार्टी ऐसी नही है, जिसकी छवि ऐसी हो जो यह कह सके कि हमारी पार्टी के सभी राजनेता स्वच्छ छवि के हैं। जिस समय पं0 दीनदयाल जी एवं डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ नाम से राजनैतिक पार्टी का गठन किया था। उस समय उन्होंने कल्पना भी नही की थी कि उनकी पार्टी में भी आज स्वच्छ छवि की पार्टी है, कहना मुश्किल है क्योंकि उसके (भाजपा) भी अनेक विधायक, सांसद ऐसे हैं जो अन्य पार्टियों से दल बदल करके आये है और कई अन्य पर न्यायालय के मामले विचाराधीन हैं ।

वैश्विक स्तर पर विकास की अवधारणा कालान्तर में अत्यन्त संकुचित रही है और शारीरिक सुख के उद्देश्य से निरन्तर भौतिक सामग्रियों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि ही विकास का मुख्य संकेतक रहा है। जिससे मानव का समग्र विकास नहीं हो पाया और इस विकास की प्रक्रिया में मानव के सम्पूर्ण स्वरूप को दृष्टिगत नहीं किया गया। जिसका प्रभाव मनुष्य के मानवीय मूल्योंध संस्कृतियों तथा मनुष्य के समस्त गतिविधि को प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से संवेदनहीनता, प्रकृति के प्रति निष्ठुरता, विषमता आदि में वृद्धि हुई और उनमें विकास की गति विषमता की ओर ले गई। केंद्र सरकार की वित्तीय समावेशन की योजना आज समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही है तो वह पंडित जी के अंत्योदय का ही उदाहरण है। पं0 दीनदयाल जी के विचारों का ही प्रभाव है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने *'दीनदयाल अंत्योदय योजना'* की शुरुआत की जो आज ग्रामीण भारत की एक नई क्रांति बन चुकी है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय का यही विचार अंत्योदय के मूल का जनक है और इससे ही मोदी सरकार का मूलमंत्र बना है– ***"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास"।***

दीनदयाल जी का मानना था, ***"एक सबल राष्ट्र ही विश्व को योगदान दे सकता है"*** और यही संकल्पना प्रधानमंत्री मोदी के आत्मनिर्भर भारत की मूल अवधारणा है, जिसका दर्शन कोरोनाकाल में विशेषकर देखने को मिला। मोदी सरकार ने कोरोनाकाल में आत्मनिर्भरता की शक्ति से अंत्योदय एवं एकात्म मानव दर्शन को सिद्ध किया। कोरोनाकाल में हर वर्ग, हर तबका, हर समुदाय की चिंता की गई तथा प्रत्येक को हर संभव सहायता पहुंचाने का प्रयास किया गया। पूरी दुनिया को दवाई से लेकर वैक्सीन तक पहुंचाया गया। यह एक अनुकरणीय उदाहरण है। कोविड काल में देश के 80 करोड़ लोगों के फ्री अनाज देना, किसान सम्मान निधि में अभी तक पौने दो लाख करोड़ की राशि सीधे बैंक खाते में पहुंचाना, 45 करोड़ से अधिक गरीबों का जनधन खाते खुलवाना, उज्ज्वला के तहत 9 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन, घर–घर शौचालय का निर्माण, स्वनिधि योजना, आयुष्मान भारत, नल जल योजना आदि के जरिए कदम बढ़ा रही केंद्र सरकार की सभी गरीबोन्मुख पहल पंडित जी के अंत्योदय के दर्शन से ही निकली हैं. एकात्म मानववाद और अंत्योदय के

जिस रास्ते पर चलकर आज केंद्र सरकार देश के हर वर्ग के सपने का साकार कर आत्मनिर्भर भारत की ओर कदम बढ़ा रही है, उसके प्रणेता पं0 दीनदयाल उपाध्याय ही हैं।

6.0 सुझाव

(क) आर्थिक आधारित सुझाव

- व्यक्ति को अपने जीवन में अधिक उत्पादन, समान वितरण एवं सीमित उपयोग के शिद्धान्त का पालन करना तथा व्यक्ति की सम्पत्ति का अधिकार व्यक्ति के पास होना चाहिए लेकिन राष्ट्रहित में सम्पत्ति का उपयोग करने के लिए सम्पत्ति का अधिकार लिया जा सकता है।
- व्यक्ति में सृजनशीलता का गुण विकसित करने के लिए लघु और कुटिर उघोगो का बढ़ावा देना चाहिए जिजसे अधिक व्यक्ति को रोजगार मिल सके तथा आर्थिक विकेन्द्रीकरण लाया जा सकें।

(ख) सामाजिक आधारित सुझाव

- समाज में प्रचलित रूढ़ियो को त्यागना चाहिए, व्यक्ति को समाज में आये हुए दोषों के प्रति सजग रहना चाहिए और उन दोषो का उन्मूलन कर देना चाहिए।
- मुस्लिम समाज को शिक्षा प्रदान कर और राष्ट्रीय इतिहास और संस्कृति से जोड़कर उन्हें राष्ट्रीय विकास में अग्रणी भूमिका में लाया जा सकता है तथा महिला, समाज में पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति और जनजाति को राजनैतिक अधिकार देकर सशक्त बनाना चाहिए।

(ग) राजनैतिक आधारित सुझाव

- राष्ट्र विकास का आधार होना चाहिए, अन्तोदेय के सिद्धान्त पर राष्ट्र में अन्तिम पंक्ति पर खड़ा व्यक्ति का विकास सबसे पहले होना चाहिए, अर्थात सर्वप्रथम गॉव का विकास, क्षेत्र का विकास, जनपद का विकास, प्रदेश का विकास, राष्ट्र का विकास।
- लोकतन्त्र में विरोधी विचार का पूर्ण सम्मान और उसके विचारों पर विचार करना चाहिए, तथा लोकतन्त्र, जातिवाद, क्षेत्रवाद, पूंजीवाद और राजाशाही जैसे कारको से बचना चाहिए।

(घ) एकात्म मानववाद आधारित सुझाव

- भारतीय संस्कृति, सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार है उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। इसलिए अलग–अलग से विचार करना उचित नही है। भारत का समाज दर्शन विराट पुरूषवादी है। संस्कृति अवधारणा चितिमूलक है, राष्ट्र संस्कृतवादी तथा आत्मवादी है।
- भारतीय संस्कृति, विश्ववादी है, न की मजहबवादी है व्यक्ति को पूरकता तथा समन्वयवादी होना चाहिए, संस्कारवादी बनना चाहिए, संस्कारित व्यक्ति स्वायत्त समाज की स्थापना करता है।

अतः संकलित सुझाव के रूप में निम्नलिखित है–

1- पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर शिक्षण एवं शोध की आवश्यकता है, जिसे विविध स्तरों पर भी सम्मिलित की जाने की आवश्यक्ता है।

2- एकात्म माननवाद विचार, दीनदयाल उपाध्याय जी का समाज की उत्थान के लिए सार्वभौमिक विचार है जिसे व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार और क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है।

3- दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विचार पर और अधिक शौध की आवश्यकता है तथा शिक्षण के लिए पाठयक्रम में सम्मिलित कर भावी पीढ़ी को इस विचार से और अधिक अवगत कराने की आवश्यकता है।

4- भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं जीवन मूल्यों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का स्वरूप होना चाहिए। इसलिए विशेषकर विद्यार्थीयों में स्वदेशी मनोभाव विकसित करने की आवश्यक्ता है।

7.0 निष्कर्ष

इस अध्याय में समायिक, आर्थिक, राजनैतिक राष्ट्रवाद का पं0 दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि से मूल्यांकन और प्रासंगिकता का उल्लेख के साथ निष्कर्ष और सुझाव भी दिये है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने इस एकात्म मानववाद की विचारधारा को देश और दुनिया के सामने तब प्रस्तुत किया, जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ। तो एक विवाद पैदा हो गया कि भारत में पूंजीवाद को, अपनाना चाहिये या समाजवाद को परन्तु दीनदयाल द्वारा दिये दर्शन के अनुसार भारत में रहने वाला एक मानव समूह और इसके प्रति प्रेम की भावना रखने वाला व्यक्ति है। उनकी जीवन प्रणाली कला, साहित्य और दर्शन सभी भारतीय संस्कृति है। इसलिए यह संस्कृति भारतीय राष्ट्रवाद का आधार हैं। पं० दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति एवं इसके मूल्यों की रक्षा हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के साथ उन्होंने देश को एक प्रगतिशील विचारधारा देने का काम किया और ***"वैकल्पिक राजनीति"*** की नींव रखी। उन्होंने जो अंत्योदय का मार्ग दिखाया उसी का नतीजा है कि 21वीं सदी का भारत देश के गरीब, वंचित व शोषित वर्ग को विकास की मुख्यधारा में लाने में सफल हो पा रहा है। उनका कहना था कि हम किसी विशेष समुदाय या वर्ग का नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र की सेवा करने का वादा कर रहे हैं।

एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं 'अंत्योदय' अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। इस प्रकार, यह दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में सदैव प्रासंगिकता रहेगा। पं0 दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विचारों में राष्ट्रीयता की भावना समायी हुयी है, उनका प्रत्येक चिन्तन राष्ट्रीयता को ध्यान में रखते हुये किया गया है। राष्ट्रीयता वर्तमान परिदृश्य में भारत को मजबूत एवं सशक्तिकरण के लिये महत्वपूर्ण है, इसलिए हम कह सकते है राष्ट्र अवश्यक तत्व है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ जिस पार्टी की स्थापना की वह अब वर्तमान में पूर्ण बहुमत के साथ केन्द्र और अधिकांश राज्यों में सत्ता पर काबिज है, तथा ***"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास"*** के मूल मंत्र के साथ लगातार कार्य करते हुये अंत्योदय को साकार कर रही है। यह विचार पं0 दीनदयाल उपाध्याय ने आधी सदी पहले प्रतिपादित किया था अतः वर्तमान राजनीतिक परिपेक्ष्य मे उपाध्याय जी के विचारों की प्रासंगिकता बनी हुयी है।

इस प्रकार दीनदयाल जी का चिन्तन यह दर्शाता है कि व्यक्ति और समाज में विरोध मानना भूल है। विकृतियों अथवा अव्यवस्था पर चिंतन करना अपने स्थान पर उचित है, पर मूल सत्य यही है कि व्यक्ति और समाज अभिन्न और अविभाज्य है। सुसंस्कृत अवस्था यही है कि व्यक्ति अपनी चिंता करते हुए भी समाज की चिंता करेगा। दोनों की सामान्य स्थिति है पूरकता। समाज को हानि पहुँचाकर अपना भला करना, यह मानव स्वभाव की विकृत अवस्था है। व्यक्ति का समर्पण समाज के लिए आवश्यक है साथ ही व्यक्ति को समर्थ बनाने और विकास करने में सब प्रकार की स्वतंत्रता देने का काम समाज का है। अतः संकलित सुझाव के रूप में निम्नलिखित है–

1. पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर शिक्षण एवं शोध की आवश्यकता है, जिसे विविध स्तरों पर भी सम्मिलित की जाने की आवश्यक्ता है।
2. एकात्म माननवाद विचार, दीनदयाल उपाध्याय जी का समाज की उत्थान के लिए सार्वभौमिक विचार है जिसे व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार और क्रियान्वयन करने की आवश्यकता है।
3. दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विचार पर और अधिक शौध की आवश्यकता है तथा शिक्षण के लिए पाठयक्रम में सम्मिलित कर भावी पीढ़ी को इस विचार से और अधिक अवगत कराने की आवश्यकता है।

4. भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं जीवन मूल्यों पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली का स्वरूप होना चाहिए। इसलिए विशेषकर विद्यार्थीयों में स्वदेशी मनोभाव विकसित करने की आवश्यक्ता है।

सन्दर्भ सूची

एकात्म दर्शन, दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, अध्याय–2, राष्ट्रवाद की सही कल्पना, पृ0 1–40।
एकात्म दर्शन, दीनदयाल उपाध्याय, नई दिल्ली, राष्ट्रजीवन के अनुकूल रचना, पृ0 72।
शर्मा, डॉ0 महेश चन्द्र, दीनदयाल उपाध्यायः कर्तव्य एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, राजनीतिक विचार, 2008 पृ0 1–292।
ठेगडी दत्तोपंत– "एकात्म मानववाद" एक अध्ययन भारतीय संस्कृति पुनरूत्थान समिति उ0प्र0 पृ0 22।
माथुर, जगदीश प्रसाद, जनसंघ के मूल विचारक पं0 दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन, दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली, पृ0 60–61।
मुरली मनोहर जोशी, भौतिकी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान में आयोजित दीनदयाल जयन्ती पर 25 सितम्बर 1984 में दिये गये भाषण, पृ0 03।
सिंह, राजनीति, 'जब वे चुनाव लड़े, राष्ट धर्म दीनदयाल उपाध्याय स्मृति अंक जून–जुलाई 1968
पं0 दीनदयाल उपाध्याय (कर्तव्य एवं विचार) डॉ0 महेन्द्र चन्द्र शर्मा, प्रभात प्रकाशन, दार्शनिक अवधारणायें, पृ0 320।
पं0 दीनदयाल उपाध्याय, विचार–दर्शन (व्यक्ति दर्शन) विश्व नाराण देवधर, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 74।
पं0 दीनदयाल उपाध्याय, विचार–दर्शन कर्तव्य एवं विचार, सुरूचि प्रकाशन, दार्शनिक अभिधारणायें, पृ0 316।
पांजन्य, 21 फरवरी 1966, पृ0 10, उत्तर प्रदेश संघ के मुरादाबाद अधिवेशनों में पं0 दीनदयाल उपाध्याय का भाषण।
श्री अरविन्द, एशिया की भूमिका, 'वन्दे मातरम्' ये लिखा गया लेख 'यूरोप और एशिया', 03 जुलाई 1908, पृ0 69–71।
शर्मा, महेशचन्द्र– उपाध्याय दीनदयालः कर्तृत्य एवं विचार, वसुधा पब्लिकेशन प्रा0लि0 नई दिल्ली पृ0 418–421।
उपाध्याय दीनदयाल– बौद्धिक पंजिका बौद्धिक वर्ग राजस्थान संघ शिक्षा उदयपुर 1964 दीनदयाल शोध नई दिल्ली पृ0 35।
उपाध्याय दीनदयाल– बौद्धिक वर्ग, संघ शिक्षा वर्ग दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली 1962 पृ0। 156।
उपाध्याय दीनदयाल– पाञ्चजन्य, नई दिल्ली अगस्त 1964, पृ0 179।
उपाध्याय दीनदयाल– "एकात्म दर्शन" दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली, 1956, पृ0 18–69।
उपाध्याय, पं0 दीनदयाल, विचार दर्शन, सुरूचि प्रकाशन केशव पुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली, पृ0 39–198।
दीनदयाल उपाध्याय (कर्तव्य एवं विचार) डॉ0 महेश चन्द्र शर्मा, एकात्म मानववाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 329।
नाना जी देशमुख से भेंट वार्ता, साक्षात्कार पत्रिका, 01 जनवरी 1984, दिल्ली, पृ0 26।
अटल बिहारी वाजपेयी, टियरफुल ट्रिब्सूट्स, ऑर्गेनाईज़र, 25 फरवरी 1968।